॥ जन्मदिनके शुभ अवसर पर स्वस्तिवाचन ॥

⊛

पश्येम शरदः शतम् । जीवेम शरदः शतम्।
बुध्येम शरदः शतम् । रोहेम शरदः शतम्।
पूषेम शरदः शतम् । भवेम शरदः शतम्।
भूयेम शरदः शतम् । भूयसी शरदः शतात्॥

(अथर्ववेद १९। ६७। १—८)

हम सौ वर्षतक देखते रहें। सौ वर्षतक जियें, सौ वर्षतक ज्ञान प्राप्त करते रहें, सौ वर्ष तक उन्नति करते रहें, सौ वर्षतक हृष्ट-पुष्ट रहें, सौ वर्षतक शोभा प्राप्त करते रहें और सौ वर्षसे भी अधिक आयुका जीवन जियें।

⊛

आयुष्प्रद महाभाग सोमवंशसमुद्भव।
महातपो मुनिश्रेष्ठ मार्कण्डेय नमोऽस्तु ते॥
चिरञ्जीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने।
रूपवान् वित्तवांश्चैव श्रियायुक्तश्च सर्वदा॥
मार्कण्डेय नमस्तेऽस्तु सप्तकल्पान्तजीवन।
आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन् मुने॥
चिरञ्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरो द्विज।
कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीविनम्॥
मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्तजीवन।
आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं अस्माकं वरदो भव॥

—इन मन्त्रोंका भाव यह है—सोमवंशमें प्रादुर्भूत, आयु प्रदान करनेवाले महान् तपस्वी महाभाग! मुनिश्रेष्ठ मार्कण्डेयजी! आपको नमस्कार है। हे मुने! जैसे आप चिरञ्जीवी हैं, वैसे ही मैं भी चिरञ्जीवी होऊँ और उत्तम रूप, सम्पत्ति तथा लक्ष्मीसे सदा सम्पन्न रहूँ। सात कल्पोंतक जीवित रहनेवाले हे मार्कण्डेयजी! आपको नमस्कार है। हे मुने! हे भगवन्! आयु तथा आरोग्य प्रदान करनेके लिये आप प्रसन्न होइये। हे द्विज! जिस प्रकार आप चिरञ्जीवी तथा मुनियोंमें श्रेष्ठ हैं, वैसे ही हे मुनिशार्दूल! आप मुझे भी चिरञ्जीवी बनाइये। सात कल्पान्ततक जीवित रहनेवाले हे महाभाग मार्कण्डेयजी! आयु तथा आरोग्यकी सिद्धिके लिये आप हमें वर प्रदान करनेवाले होइये।

⊛ इसी प्रकार अश्वत्थामा आदि सात चिरजीवियोंका भी निम्न मन्त्रसें प्रार्थनापूर्वक स्मरण करना चाहिये, इससे अपमृत्यु दूर होती है और दीर्घायु प्राप्त होती है—

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः॥
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः॥

⊛ माता-पिता तथा समस्त उपस्थित लोग तापमें अक्षत, पुष्प लेकर निम्न आशीर्वाद दें तथा बच्चेके सिरपर अक्षत-पुष्प छोड़ें।

- दीर्घं आयुष्मान् भव।
- विद्यावान भव।
- सद्गुणवान भव।

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः॥

जीवेम शरदः शतम्

कर्म करते हुए, सौ बरस तक जिएँ,
धर्म धारण किए, सौ बरस तक जिएँ।

सौ बरस तक, नयन ज्योति क्षमता रहे, सौ बरस तक, श्रवण शब्द सुनता रहे,
सौ बरस तक, गिरा में, प्रखरता रहे, सौ बरस तक, सृजन कर्म चलता रहे,
शक्ति रखते हुए, सौ बरस तक जिएँ,
कर्म करते हुए, सौ बरस तक जिएँ।

प्रभु पराधीन होकर न, जीना पड़े, नित पसीना बहे, विष न पीना पड़े,
हम, अमृत पुत्र हैं, भान होता रहे, कर्म में धर्म का ध्यान होता रहे,
सिंधु तरते हुए, सौ बरस तक जिएँ,
कर्म करते हुए, सौ बरस तक जिएँ।

सत्य संकल्प का बल मिला है हमें, प्राण, प्रज्ञा, प्रभा बल मिला है हमें,
हर कठिन प्रश्न का हल मिला है हमें, दिव्य जीवन सफल, फल, मिला है हमें,
नित सँभरते हुए, सौ बरस तक जिएँ,
कर्म करते हुए, सौ बरस तक जिएँ।

दैव की देन को, देवता रूप दें, त्याग, तप, तेज की, दिव्यता धूप दें,
प्यार, विश्वास, हारे, नहीं राह में, लोकमंगल बसा बोध में, चाह में,
स्वर्ग रचते हुए, सौ बरस तक जिएँ,
कर्म करते हुए, सौ बरस तक जिएँ।

मेंट जाएँ, सभी रोग, दुःख, शोक भी, छोड़ जाएँ यहाँ, ज्ञान-आलोक भी,
फिर न कोई कहे, प्रभु उठा लो हमें, दीनता-दाह से, प्रभु बचा लो हमें,
स्वस्थ, हँसते हुए, सौ बरस तक जिएँ,
कर्म करते हुए, सौ बरस तक जिएँ।